श्रृंखला सिद्धान्त

कॉम्टे, स्पेन्सर और **कार्ल मार्क्स** इस सिद्धान्त के प्रतिपादक माने जाते हैं। इन्होंने समाज के विकास के क्रम को ऐतिहासिक बताया तथा एक ऐसे समाज की कल्पना की, जहाँ परिवर्तन एक श्रृंखला के रूप में पाया जाता है, जो एक चक्र के रूप में बढ़ते हुए अन्त में स्थिर हो जाता है।

चक्रीय सिद्धान्त

इस सिद्धान्त के प्रतिपादक **स्पेंगलर, सोरोकिन** और **टायनबी** हैं। सोरोकिन ने समाज को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है विचारात्मक, संवेगात्मक व आदर्शात्मक-जो समाज में समयानुसार परिवर्तन लाती है।

टायनबी ने समाज में परिवर्तन के कारण व्यक्ति की आन्तरिक आध्यात्मिक शक्ति को माना है। **स्पेंगलर** ने सामाजिक परिवर्तन के लिए तीन घटनाओं को उत्तरदायी माना है—जन्म, परिपक्वता और अन्त, इनके कारण समाज में परिवर्तन आता है।

सामाजिक परिवर्तन के रूप

सामाजिक परिवर्तन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। यह परिवर्तन हमेशा एकसमान नहीं होते। इसके विभिन्न रूप होते हैं। यह प्रक्रिया विकासात्मक परिवर्तन, लहरदार परिवर्तन, चक्रीय क्रम परिवर्तन के रूपों में दृष्टिगोचर होती है। सामाजिक परिवर्तन के कुछ महत्त्वपूर्ण तत्त्व पाए जाते हैं, जो सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी होता है।

सामाजिक परिवर्तन के स्वरूप को समझने के लिए समाज के विभिन्न घटकों में हुए परिवर्तन को देखना आवश्यक होता है। उदाहरणस्वरूप समाज में शिक्षा का परिवर्तन, सामाजिक स्थिति में परिवर्तन, आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आदि। इस सब परिवर्तन के पीछे कुछ तत्त्वों का योगदान होता है।

सामाजिक परिवर्तन के मूल तत्त्व

सामाजिक प्रगति एवं समृद्धि के लिए परिवर्तन आवश्यक होता है। सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन और विश्लेषण पाँच मूल तत्त्वों की सहायता से किया जाता है, *ये मूल तत्त्व निम्नलिखित हैं*

- सामाजिक चिन्तन
- सामाजिक भूमिका
- सामाजिक मूल्य एवं आचरण
- सामाजिक सम्बन्ध
- सामाजिक मानक एवं संस्कृति